व्यवहार में लोकतंत्र | एक शिक्षक ने दिखाई राह

सचिन सालक्की

हाल ही में, हमने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाया, भारत की स्वाधीनता के शानदार 75 साल। इसका अर्थ है कि हम पिछले 75 वर्षों से एक स्वतंत्र मुल्क़ हैं और हमारा ख़ुद का संविधान है जिसमें हमने ऐसे बुलन्द मूल्य स्थापित किए हैं जिनका हम एक राष्ट्र के रूप में एक नए भारत को बनाने के लिए अनुसरण करना चाहेंगे। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि हमने इन संवैधानिक मूल्यों के बारे में जागरूकता निर्मित करने के लिए बहुत कम काम किया है। हमने संविधान पढ़ने के लिए उपलब्ध नहीं कराया या संविधान के मूल्यों का वास्तविक अर्थ बच्चों द्वारा समझने और आत्मसात करने के लिए उन्हें तैयार नहीं किया। अध्ययन यह बताते हैं कि वस्तुतः बच्चे 5-7 साल की उम्र के बीच मूल्यों को ग्रहण करते हैं। एक देश, समाज और व्यक्तियों के बतौर, इन मूल्यों को हासिल करने की दिशा में हमारे प्रयास अपर्याप्त रहे हैं। यह लेख इस बात को उल्लिखित करता है कि अगर कोई एक व्यक्ति भी चाह ले तो वह क्या नहीं हासिल कर सकता।

मिशन पर एक शिक्षक

शेखर नायक गोडीनाल (जिला कोप्पल, कर्नाटक) में शासकीय लोअर प्राइमरी स्कूल में सहायक शिक्षक हैं। वे एक ऐसे शिक्षक हैं जो अपने जीवन में संवैधानिक मूल्यों को लागू करने का प्रयास करते हैं। यह स्कूल सुदूर बसने वाले एक समुदाय के बीच स्थित है जिन्हें स्कूल और शिक्षा के बारे में कोई ख़ास ज्ञान नहीं है। इस छोटे-से स्कूल कैम्पस में सिर्फ़ तीन पक्के कमरे हैं और प्रवेशद्वार पर लगे एक पत्थर पर भारत के संविधान की प्रस्तावना उकेरी गई है जो आगन्तुकों का स्वागत करती है। रोज़ाना की स्कूल सभा के तहत एक विद्यार्थी प्रस्तावना को ज़ोर से पढ़ता/ पढ़ती है और दूसरे सहपाठी उसका अनुसरण करते हैं, जिससे कक्षा-5 तक का प्रत्येक विद्यार्थी आसानी से प्रस्तावना को याद कर ले और उसे दोहरा सके।

शेखर नायक को जो भी अवसर मिलता है, उसका इस्तेमाल वे बच्चों के भीतर संवैधानिक मूल्य डालने का प्रयास करने में करते हैं :

- समानता : बच्चों को उनके उचित नामों से पुकारकर बच्चों का सम्मान करना, शारीरिक बनावट व सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का सम्मान करना और सभी जेंडरों से समानता का व्यवहार करना।
- स्वतंत्रता : सभी बच्चों को बोलने का मौक़ा देना, वे जहाँ भी बैठना चाहें वहाँ बैठने देना।
- भाईचारा : एक-दूसरे के लिए समानुभूति की भावना, टीम वर्क और एक-दूसरे के काम की सराहना करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना।

यह काम वे उस माध्यम से करते हैं, जिसे वे 'लोकतांत्रिक प्रक्रिया' कहते हैं। इस प्रक्रिया का व्यवहार हर जगह किया जाता है - स्कूल सभा से लेकर कक्षा तक। बैठने की व्यवस्था एक गोले में की जाती है, प्रत्येक बच्चे को महत्त्व दिया जाता है ताकि चर्चा के दौरान उसे खुलकर बोलने का मौक़ा मिले, प्रत्येक बच्चे के मत को सराहा जाता है और सही व ग़लत क्या है इसे समझने और खोजने के लिए उनसे सवाल भी किए जाते हैं। इससे शेखर नायक को बच्चों व समुदाय का विश्वास जीतने में और उनके साथ एक गहरा नाता बनाने में मदद मिली है। लड़कियों को शिक्षित करने के प्रति उनकी संवेदनशीलता सराहनीय है जिसने प्रत्येक अकादमिक वर्ष में लड़कियों के नामांकन बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वर्तमान में यह संख्या 142 है और स्कूल में लड़कों से ज़्यादा लड़कियाँ हैं।

बच्चों और शिक्षा के प्रति शेखर नायक के इस रुख ने उन्हें कक्षा में ऐसे व्यवहार को विकसित करने में मदद की है जिसके तहत शिक्षक ने व्यक्तिगत रूप से और बच्चों के साथ मिलकर कुछ नियम बनाए हैं। इसमें से एक है गोले में बैठने की व्यवस्था जिससे चर्चा के दौरान शिक्षक और सभी विद्यार्थी एक-दूसरे को देख सकते हैं। शिक्षक बच्चों के साथ मिड-डे मील भी खाते हैं। दूसरों को सुनना, सभी के विचारों का सम्मान करना, चर्चाओं के दौरान सवाल पूछने या अपनी राय व्यक्त करने के लिए हाथ उठाकर अपनी बारी का इन्तज़ार करना आदि ऐसे नियम हैं, जिनका सभी विद्यार्थी अनुसरण करते हैं और इनके कारण शेखर नायक के विद्यार्थियों को एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव विकसित करने में मदद मिली है।

शुरुआत में, चर्चा के दौरान बच्चों को खुलकर बोलने के लिए प्रेरित करना उनके लिए चुनौतीपूर्ण था। लेकिन उन्हीं में से एक

बनकर, उनकी परिस्थितियों को सन्दर्भ देकर व प्रत्येक चर्चा को बच्चों के जीवन से जोड़कर वे इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सके हैं। उनका कहना है कि लोकतांत्रिक होना कोई सरल चीज़ नहीं है क्योंकि चीज़ों को देखने का यह पूर्ण रूप से नया नज़रिया होता है, जिसका आदी होने में समय लगता है।

प्रक्रिया

शेखर नायक ने इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया की शुरुआत बच्चों को ग़ैर-अकादमिक ज़िम्मेदारियाँ देकर की, जैसे राष्ट्रीय त्योहारों को मनाना, त्योहारों को कैसे मनाया जाए, इस पर बच्चों की राय आमंत्रित करना और अभिभावकों व समुदाय को ऐसे उत्सवों में आमंत्रित करना। उन्होंने इसे बच्चों के एक छोटे समूह के साथ शुरू किया व उनके व्यवहारों में और धीरे-धीरे, उनके अकादमिक प्रदर्शन में सकारात्मक परिवर्तन देखे। उनकी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बहुत सफल रही है। कक्षा-3 और उससे ऊपर के 95 प्रतिशत बच्चों ने समझ के साथ पढ़ना, स्वतंत्र रूप से लिखना और साथ ही गणित की चार बुनियादी संक्रियाएँ सीखीं।

कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान वे प्रत्येक बच्चे के घर गए और बच्चों के घरों के नज़दीक स्थित सार्वजनिक जगहों पर उनके लिए सीखने के दो समूह बनाए। वे प्रत्येक समूह के साथ आधा दिन काम करते थे ताकि उन बच्चों का सीखना सुनिश्चित हो सके। उन्होंने उन बच्चों के घर जाकर उनकी मदद भी की जिनके अभिभावक कोरोना महामारी के कारण अपने बच्चों को सामुदायिक कक्षा में भेजने में हिचक रहे थे।

इसके अतिरिक्त अन्धविश्वासों पर बच्चों के सवालों से प्रेरित होकर उन्होंने इन्हें दूर करने के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए।

चार सूत्रीय कार्यक्रम

शेखर नायक की लोकतांत्रिक प्रक्रिया निम्न बिन्दुओं पर ज़ोर देती है -

1. भारत के संविधान की प्रस्तावना सबको उपलब्ध करानी चाहिए। आज देश में दफ़्तरों और स्कूलों जैसे सार्वजनिक स्थलों पर इसे पाना बहुत मुश्किल हो गया है। स्कूल की दीवार पर प्रस्तावना को प्रदर्शित करने से यह बेहतर ढंग से दिखाई देगी और बच्चे, चाहे इसका अर्थ नहीं भी समझ पा रहे हों तो भी कम-से-कम इसे नियमित रूप से देखेंगे और अन्य लोगों को इसके बारे में बताएँगे। हम जैसा चाहते हैं वैसे समाज का विचार बनाने की तरफ़ इसे पहला क़दम समझा जा सकता है।
2. ज़्यादातर वयस्कों को प्रस्तावना की पहली दो या तीन पंक्तियाँ भी याद नहीं होतीं। रोज़ की स्कूल सभा के दौरान राष्ट्रगान के साथ प्रस्तावना को पढ़ना अनिवार्य किया जाना चाहिए।

चित्र-1 : शासकीय लोअर प्राइमरी स्कूल, गोडीनाल।

3. वास्तविक मूल्य हमारे कह देने भर से हासिल नहीं होते बल्कि हम जो व्यवहार करते हैं और जो दर्शाते हैं, उससे हासिल होते हैं। जब बच्चे कक्षा में या बाहर ग़लतियाँ करते हैं तब प्रभारी वयस्कों को प्रस्तावना के सिद्धान्तों का व्यवहार करते हुए दिखना चाहिए ताकि बच्चे ख़ुद उनका अनुसरण करें, बजाय इसके कि उन्हें ऐसा करने के लिए स्पष्ट रूप से कहा जाए।
4. लोकतंत्र के बारे में सक्रिय रूप से सीखने से बच्चों को अपना वह सम्मान हासिल करने में मदद मिलती है जिसके वे अधिकारी होते हैं, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो। उन्हें अपने विचार रखने में और दूसरे के विचारों को खुले मन से स्वीकार करने में मदद मिलती है। उनमें संवाद के कौशल और वैज्ञानिक मिज़ाज के लिए ज़रूरी आलोचनात्मक चिन्तन का विकास होता है। टीमवर्क और परस्पर सहयोग की भावना को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

शेखर नायक कहते हैं, "दूसरों के प्रति, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, संवेदनशीलता व सम्मान रखने के कारण मुझे लोकतांत्रिक स्कूल प्रक्रिया के विचार को विकसित करने में मदद मिली। प्रत्येक बच्चे के बोलने, सवाल करने के अवसरों को बनाने और सामाजिक-आर्थिक व धार्मिक विविधताओं के प्रति सम्मान बरतने की वजह से मुझे इन परिणामों को हासिल करने में सहायता मिली।"

सचिन सालक्की अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कोप्पल, कर्नाटक स्थित ज़िला संस्था में रिसोर्स पर्सन हैं। उन्होंने केमिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है और वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के 2015 बैच के फ़ेलो हैं। वर्तमान में वे शुरुआती गणित के क्षेत्र में शिक्षक अध्यापक के रूप में काम कर रहे हैं। उनसे *sachinkumar.salakki@azimpremzifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

हम सभी की अलग-अलग पहचानें हैं, जिनमें से कुछ हमें सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं, जैसे कि जाति, जेंडर, वर्ग, धर्म, आदि द्वारा दी गई हैं। ये सभी हमारे रोज़मर्रा के चुनावों के साथ-साथ हमारे अनुभवों को तय करने में अपनी भूमिका निभाती हैं। ऐसा कक्षा के अन्दर भी होता है। यहीं पर एक शिक्षक या सुगमकर्ता के रूप में हमारी भूमिका आती है - हमारे जीवन को आकार देने वाले सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक पहलुओं को समझना और उन पर ध्यान देना।

- इशा बडकस, व्यापक यौनिकता शिक्षा : सम्भावनाओं का विस्तार, पेज 53